Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 9 (2023) pp: 332-335
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

मुहम्मद इकबाल के चिंतन का मुसलमानों के बौद्धिक पुनर्जागरण पर प्रभावः एक ऐतिहासिक अध्ययन

पाकीजा तवकीर शीबा
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया, बिहार

सार
बीसवीं शताब्दी में भारत के मुस्लिम चिन्तकों में सबसे प्रमुख और प्रभावशाली नाम मुहम्मद इकबाल का है। उनका जन्म स्यालकोट में 1873 ई0 में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा पौर्वात्य गुरु की देखरेख में हुई जिसने उन्हें अरबी फारसी सिखाई और कुरान पढ़ाई। फिर वह एक अँग्रेजी स्कूल में प्रविष्ट हुए। उच्च शिक्षा उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से संबध लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज में पाई। वह असाधरण बौद्धिक गुणों से सम्पन्न थे। वह अत्यन्त भाव–प्रण युवक थे। उनमें त्वरित ग्रहण शक्ति और प्रत्युत्पन्नमति थी लेकिन वह अस्थिर चित्त थे। युवकोचित बहक के दिन बीतने के बाद अपनी तीव्र संवेदात्मकता, कल्पनाशक्ति और रहस्योन्मुख मानस के कारण वह अत्यन्त धर्म परायण बन गए। उनकी अन्तरात्मा में इस्लाम के लिए पूर्वाग्रही अनुराग, उसकी महत्ता के लिए गद्य और उसकी वर्तमान दुर्दशा के लिए आंतरिक पीड़ा दहकती रहती थी।

विस्तार

इकबाल जन्मजात कवि थे। बचपन में भी उन्होंने उर्दू में शेर कहे। जैसे–जैसे उनकी आयु बढ़ती गई, उनकी प्रतिभा प्रस्फुटित होती गई और उनको अभिव्यक्ति के दो–दो माध्यमों–उर्दू और फारसी पर अधिकार प्राप्त करने का यश मिला। दोनों ही में उन्होंने युग–प्रवर्तक कविताएँ लिखीं जो तब तक याद की जाती हैं।

उनकी रुचि मुख्यतः धर्म, दर्शन और साहित्य में थी। विद्यार्थी जीवन में वह कुशाग्र थे और उसकी परिणति उनकी कॉलेज में नियुक्ति के साथ हुई। ज्ञान के शोध में वे कैम्ब्रिज और म्युनिख गए। कैम्ब्रिज में वे मैकटेगार्ट के सम्पर्क में आए जो हेगेल के भाष्यकार थे। म्युनिख में, जहाँ उन्होंने 'ईरान में तत्वमीमांसा का विकास' विषय पर शोध–प्रबंध प्रस्तुत किया, उन्होंने जर्मन भाषा सीखी। गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में वे टी0 डब्लू0 आर्नोल्ड के प्रिय विद्यार्थी रह चुके थे। आर्नोल्ड महोदय इस्लामी संस्कृति के बड़े प्रशंसक थे। कुछ महीने तक इकबाल ने लंदन विश्वविद्यालय में अरबी पढ़ाई और उन्होंने वकालत की डिग्री भी हासिल की।

1908 ई0 में वे स्वदेश लौटे। गवर्नमेंट कॉलेज में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए और उन्हें वकालत करने की भी अनुमति मिल गई। सरकारी नौकरी उनके लिए कष्टकर हो रही थी क्योंकि वह उनकी अभिव्यक्ति एवं स्वाधीनता को सीमित करती थी। लेकिन उनका मन वकालत में भी नहीं लगता था। इसलिए तीस वर्ष तक वह वाग्देवी की आराधना करते रहे। ये तीस वर्ष उनके जीवन के स्वर्णिम वर्ष हैं जिन्होंने उन्हें सफलता और यश के शिखर पर पहुँचाया।

यूरोप जाने से पहले ही इकबाल की गिनती एक होनहार शायर के रूप में होने लगी थी। मधुर शब्द–योजना, ताजा पद–विन्यास, समृद्ध कल्पना, उपमा–उत्प्रेक्षाओं की अद्‌भुत मौलिकता, छन्दों की अमन्द गेयता–इन सबने उन पर प्रथम कोटि के काव्य–नक्षत्रा का ठप्पा लगा दिया। लेकिन तब तक शैली पर अधिकार के साथ–साथ उनके काव्य चिन्तन का विषय पारंपरिक ही था परंतु मानसिक क्रांति का मार्ग खुल चुका था। उस ओर उनकी यात्रा यूरोप में आरंभ हुई जहाँ वे उस महाद्वीप की राजनीतिक और वैचारिक उथल–पुथल के तीन वर्षों में रहे जिनकी परिणति विनाशकारी प्रथम विश्वयुद्ध में हुई।

बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में यूरोप एक गैर–यूरोपीयों को ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे वह एक उबलता हुआ कुण्ड हो जिसमें पड़े हुए मानव घृणा तथा रक्तपिपासा से बौखला रहे हों। ब्रिटेन और फ्रांस जैसे दृढ़ तृप्त राष्ट्रों, जर्मनी और इटली जैसे देर से प्रविष्ट होने वाले अतृप्त राष्ट्रों, और रूस जैसे विस्तार के लिए व्याकुल महत्वाकांक्षी राष्ट्रों के साम्राज्यवादी इरादे एक–दूसरे राष्ट्र के बाजारों के विस्तार, प्रभाव के प्रसार और शोषण के मौके खोजने के लिए होड़

लगा रहे थे। यह वीभत्स दृश्य यूरोपीय राजनेताओं को रोमांचित करता रहता था लेकिन मुस्लिम राज्यों में घबराहट और कंपकंपी पैदा करता रहता था। कारण यह था कि पश्चिम के विस्तारवाद के शिकार मुख्यतः एशिया और अफीका के ही मुस्लिम देश थे।

साम्राज्यवादी शैतानियत और राष्ट्रवादी पशुता, इन दोनों के विरुद्ध इकबाल की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। उन्हें लगा कि जैसे पाश्चात्य मनुष्य ने एक धार्मिक मानस और मानवीयता प्रेमी रहस्यवादी के प्यारे आदर्शों को पूर्णतः तिलांजलि दे दी हो। अतएव आश्चर्य नहीं कि तभी से वह राष्ट्रवाद के कट्टर विरोधी बन गए।

इसके अलावा, इकबाल ने यूरोप में जो कुछ देखा और भारत में जो सुनने को मिला उससे उन्हें गहरा धक्का लगा। 1905 ई0 में लॉर्ड कर्जन के बंग–भंग के विरु(प्रबल आंदोलन शुरू हुआ जो अधिकांशतः हिन्दुओं द्वारा संचालित था। मुसलमान उस आंदोलन से नाराज हो गए क्योंकि बंग–भंग को अपने लिए हितकर मानते थे और इस प्रकार दोनों सम्प्रदायों के सम्बन्ध कटु हो गए जो कर्जन का अभीष्ट था। कर्जन द्वारा बंग–भंग के पीछे उद्देश्य भारतीयों को आपस में भिड़ा देना था।

इकबाल, जो यूरोपीय लोगों द्वारा मुसलमानों के साथ किए जाने वाले व्यवहार से बहुत रूष्ट थे, हिन्दुओं के रूख से भी नाराज हो गए। इस प्रकार की अनुदार और आत्मनिष्ठ अतिरंजना के गर्म झोकों से उनके मन में खिलनेवाला राष्ट्रवाद का सुकुमार फूल मुरझा गया। इकबाल ने, जिन्होंने 'हिन्दोस्तां हमारा' गीत लिखा था, मोह–भंग की स्थिति को महसूस किया। बंग–भंग ने उनके मन से भारत को निकाल कर इस्लाम को प्रतिष्ठित कर दिया। यूरोप ने उन्हें ऐसा अखिल इस्लामवादी राष्ट्रविरोधी बनाया जो अपमान और निराशा से तिलमिला रहा था। बंग–भंग के विरुद्ध आंदोलन में उन्हें नितान्त साम्प्रदायिक मनोवृत्ति वाला बना दिया। विश्व और भारत में होने वाली बाद की घटनाओं ने उनके विचारों को और पुष्ट बनाया।

यूरोप से वापसी के बाद के पहले पन्द्रह वर्षों में उनकी काव्य प्रतिभा की उड़ान ने अकल्पनीय उँचाइयों का स्पर्श किया। लेकिन आकाश के अपरिमित विस्तार में पंख तोलने वाले एक एकांकी उब थे। उनके दिन दुनियाँ के शोरगुल से दूर बीतते रहे। उन दिनों उन्होंने ज्यादातर फारसी में लिखा और थोड़ा बहुत उर्दू में भी, और इस प्रकार इस सच्चाई में अपने विश्वास को उजागर किया कि इस्लाम स्थानीय नहीं, सार्वदेशिक है।

उनका सार्वजनिक जीवन अन्जुमन हिमायते इस्लाम की वार्षिक बैठकों के अवसर पर उपस्थित रहने तक सीमित था जहाँ वह अवसर के उपयुक्त एक कविता पढ़ा करते थे। लेकिन ऐसी प्रत्येक कविता भाव से भरपूर होती थी जिसमें अतीत के गौरव को याद किया जाता था, वर्तमान की दुर्दशा का रोना होता था और आस्थावानों के लिए आह्वान होता था कि उठें, जागें और तब तक चैन की सांस न लें जब तक इस्लाम की नियति अपनी पूर्णता को न प्राप्त कर लें। प्रत्येक ऐसी कविता एक घटना होती थी, एक आह्वान होता था। लेकिन उसका असर क्षणिक होता था–आँसू और आहों के बाद एक शांति और विस्मरण, और अगले साल फिर एक नई कविता का पाठ।

ये वे वर्ष थे जब दुनिया को कंपा देने वाली घटनाएँ घटीं: विश्वयुद्ध आया, साम्राज्य पद–दलित हुए, राजवंश लड़खड़ाए, पवित्र संस्थाएँ अचानक विलुप्त हुई। भारत भी, मुस्लिम और गैर–मुस्लिम, गाँधीजी के अहिंसक दिशा–निर्देश में अचानक जाग उठा। इनमें से कुछ मौकों पर इकबाल ने समायोजित कविताएँ लिखी अन्यथा उनके जीवन की शांत गति बनी रही।

1927 ई0 में इकबाल ने राजनीति में कूदने का निश्चय किया। उससे पहले के दस साल उन्होंने मुस्लिम समुदाय के उत्थान के अपने कार्यक्रम को लागू करने में बिताए थे। लेकिन उनकी किस्मत में अपने सपनों को सच होते देखना नहीं लिखा था। 1938 ई0 में उनकी मृत्यु हो गई।

जिन दो बौद्धिक शक्तियों ने इकबाल के मानस को ढ़ाला था वे थीं:

(क) कुरान और

(ख) पाश्चात्य दर्शन और विज्ञान, विशेषतः उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं सदी के आरंभ काल के दर्शन और विज्ञान ने, जबकि नीरो, विलियम, जेम्स और हैनरी बर्गसां के बौद्धिकता विरोधी दार्शनिक विचार लोकप्रिय हो रहे थे। लेकिन जीवन, मनुष्य और घटनाओं के तजुरबे ने–विशेषतः बीसवीं सदी के आरंभ में भारत और यूरोप में प्राप्त अनुभव ने–उनकी मानसिकता को बनाने में और व्यक्तियों तथा संस्थाओं के प्रति दृष्टिकोण विकसित करने में सबसे अधिक सशक्त योगदान दिया।

भारत के धार्मिक दर्शन का प्रवाह अन्तःप्रज्ञा, भावना और रोमानियत के तटों के बीच से होकर बह रहा था। जैसा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और अरविन्द घोष जैसे चिन्तकों के संदर्भ में कहा जा चुका है, उनके दार्शनिक विचारों की नींव वैयक्तिक अनुभूतियों में थी।

इकबाल भी अन्य भारतीय विचारकों की भाँति समान समस्याओं पर चिन्तन–मनन कर रहे थे लेकिन इस्लामी संस्कृति के चौखट में। फिर भी, उन पर अपने परिवेश का प्रभाव पड़ना अनिवार्य था। उन्होंने भी बुद्धि की जगह भावना

*Corresponding Author: पाकीजा तवकीर शीबा

पर अधिक जोर दिया।

जहाँ तक कुरानशरीफ के अध्ययन का सवाल है, इकबाल का दृष्टिकोण निश्चय ही परम्परावादी था। उनका विश्वास था कि वह दैवी पुस्तक है जिसका एक–एक लब्ज खुदा ने पैगम्बर मुहम्मद साहब को प्रकट किया था। उनका मत था कि 'पैगम्बर साहब की धार्मिक अनुभूतियाँ रहस्यवादी संतो की अनुभूतियों के समान थीं, पर वे अधिक उँचे स्तर की थीं। दोनों ही को 'ऐकिक अनुभूति' और अनिवर्चनीय के दर्शन होते हैं। संत को उनका फलितार्थ विश्राम, आत्म–तृप्ति, परम शांति एवं पूर्णता के रूप में अनुभव होता है जबकि 'पैगम्बर के लिए वह अन्तःकरण में, दुनियाँ को कंपा देने वाली उन मनोवैज्ञानिक क्षमताओं का जागरण है जो मानवीय संसार को पूरी तरह रूपान्तरित कर देती है।' वह उस अनुभूति के बाद वापस लौटकर 'समय–प्रवाह में अपने आपको ढ़ाल देता है जिससे वह इतिहास की शक्तियों को नियंत्रित कर सके और इस प्रकार आदर्शों का एक नया संसार निर्मित कर सकें।' मुसलमानों के लिए कुरान शरीफ और पैगम्बर साहब सर्वोच्च और अकाट्य प्रमाण हैं।

इकबाल ने पाश्चात्य दर्शन का व्यापक अध्ययन किया था। उनके लेखन में प्राचीन और आधुनिक दार्शनिकों के प्रति भी उनकी कृतज्ञता मिलती है। वह प्लेटो को इस्लाम विरोधी मानते थे जिनके विचारों ने मुस्लिम चिन्तकों को प्रभावित करके इस्लाम को हानि पहुँचाई थी। अरस्तू उनकी विचारधारा के अधिक अनुकूल थे लेकिन वह इतने पदार्थवादी थे कि उनको पूरी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता था।

आधुनिक दार्शनिकों में उन्हें लाइबनित्ज, नित्शे, बर्गसां, वार्ड तथा नव–यथार्थवादी पसंद थे। उनके दर्शन ने कुछ संशोधनों के साथ उक्त दार्शनिकों से वैचारिक तत्व ग्रहण किए थे। उदाहरणार्थ लाइबनित्ज का चिदाणुवाद, जो शायद आत्माओं अथवा अहंताओं के पदानुक्रम में रूपान्तरित किया गया, नीत्शे का अतिमानव का विचार जिसमें पूर्णता की धारणा निहित थी, तथा बर्गसां की ज्ञान के अन्तस्फूर्त स्रोत की धरणा जो इकबाल के अहं की असामान्य अथवा रहस्यवादी क्रिया के रूप में गृहित हुई।

यद्यपि इकबाल ने अपनी वैचारिकता की संरचना कुरान शरीफ के आधार पर की, उनके तर्क अधिकांशतः पाश्चात्य दर्शन से लिए गए थे। 'वह एक सूफी थे जिन्होंने सूफीवाद पर प्रहार किया, और शायद वह एक उदारतावादी भी थे जिन्होंने उदारतावाद पर आक्रमण किया। उनके प्रभाव का ऐतिहासिक परिणाम कुल मिलाकर शायद यह हुआ कि भारतीय मुसलमान में उदारतावाद की भावना कमजोर हुई और उसकी जगह अनुदारवादी राष्ट्रीयता और मुहम्डनवादी गत्यात्मकता ने ले ली।' यद्यपि इकबाल को इसका पूरी तरह अहसास था कि वह एक नये संदेश के वाहक हैं और हजरत मुहम्मद की मूल शिक्षाओं का पुनरुद्धार कर रहे हैं, तथापि वह अपने योगदान की प्रकृति के बारे में निश्चित नहीं थे। कभी–कभी तो वह यह कहते थे कि उनका प्रयास अभूतपूर्व है लेकिन कभी–कभी उनका यह भी कहना था कि परम्परा को सुरक्षित रखना चाहिए।

इकबाल का संदेश क्या था? वह अतीत की ओर देखते थे ताकि उसके इतिहास से वह महानता के तत्व छान सकें। वह वर्तमान में झाँकते थे ताकि वह जान सकें कि दुनिया भर में मुसलमानों की क्या खामियाँ और कमजोरियाँ हैं जिनके कारण उन्हें अपमान सहना पड़ता है। वह भविष्य पर नजर गड़ाते थे ताकि इन्हें इस्लाम के नवोन्मेष की आकर्षक झाँकी देखने को मिल सके।

लेकिन वह इतिहास, यह चेतावनी और यह संदेश नये नहीं थे। इस्लामी, दुनियाँ में समय–समय पर चेतावनी देने वाले आते रहे थे। उन्नीसवीं शताब्दी में जमाल अल्–दीन अफगानी और उनके शिष्यों ने मुसलमानों का आह्वान किया था कि वे अपने घर को ठीक–ठाक करें जिससे वे पश्चिम की चुनौती का सामना कर सकें। भारत में शाह वलीउल्लाह और उनकी विचारधाराओं ने अपफगानी से पहले ही ऐसी ही चेतावनी दी थी।

इकबाल की शिक्षा का सार अध्कि भिन्न नहीं था लेकिन उसे प्रस्तुत करने की उनकी अपनी निजी शैली थी। उन्होंने अपने विचारों को ऐसी दार्शनिक दलीलों का जामा पहनाया जिन्हें पढ़े–लिखे मुसलमान समझ सकते थे और उन्होंने उनको उस शानदार कल्पना और मोहक शब्दावली से मंडित किया जो उन्हें महान् शायर के रूप में वरदान स्वरूप प्राप्त हुई थी। उनका संदेश था व्यक्ति को याद दिलाना कि इस विषय की योजना में उसका कितना उचा दर्जा है और यदि उसमें इच्छा–शक्ति और संकल्प की दृढ़ता हो तो वह महान् नियति का स्वामी हो सकता है। उनके दर्शन का केंद्र बिन्दु व्यक्ति या स्वात्म की धरणा है। वह इस धरणा तक अपने ज्ञान के सिद्धांत द्वारा पहुँचते हैं। उनके अनुसार ज्ञान के दो पक्ष हैंः

(क) अन्तः प्रज्ञात्मक,

(ख) प्रपंचात्मक।

अन्तः प्रज्ञात्मक ज्ञान ऐन्द्रिक तथ्यों पर आधरित नहीं है, न यह देशकलाबद्ध है। वह किसी माध्यम द्वारा प्राप्त ज्ञान नहीं है। वह अद्वितीय है, तात्कालिक है, विश्लेषण से परे है और शब्दातीत है। वह सम्पूर्ण की अनुभूति है, यथार्थ दर्शन है, रहस्यात्मक अनुभव है। लेकिन वह ज्ञान जीवन्त और प्रगतिशील है। वह बीज रूप में प्रत्येक आत्मा में अवस्थित

*Corresponding Author: पाकीजा तवकीर शीबा

है और समय–समय पर मन में कौंध जाता है। लेकिन जैसा कि रहस्यवादी कहते हैं, उसकी स्फूरित और पोषित किया जा सकता है और पैगम्बरी सूक्ष्म–दर्शन द्वारा परिपूर्ण किया जा सकता है। रहस्यवादी की तलाश उसे आंतरिक प्रकाश और शांति तक ले जाती है। पैगम्बर, जिसे यह चेतना उपलब्ध है, अन्तः प्रेरणा की शक्ति से विश्व को रूपान्तरित करने का प्रयास करता है। दूसरी ओर सामान्य ज्ञान ऐन्द्रिक संवेदनों में बद्धमूल है और अवबोधन द्वारा धरणा या विचारणा तक यात्रा करता है। यह प्रपचात्मक चेतना अथवा बुद्धि ज्ञाता और ज्ञेय में विभाजित है अगर बाह्य विश्व के विनियोग तथा स्वामित्व द्वारा विकसित होती है। लेकिन स्वात्म, जो असामान्य प्रज्ञात्मक चेतना में बद्धमूल है, देश और काल की सीमा में सक्रिय प्रपंचात्मक स्वात्म से निकटता से सम्बन्धित है। वस्तुतः उच्चतर स्वात्म कोई ऐसा मूल तत्व नहीं है जो अपनी सापेक्ष चेतना से पृथक हो। लेकिन उच्चतर चेतना का मूल ईश्वरादेश या 'अग्र' में है और उसकी प्रपंचात्मक प्रतिरूप पार्थिव चेतना का मूल ईश्वरकृत सृष्टि या 'खल्क' में है।

संदर्भ

1. ए0 के0 आजाद, 'इस्लाम एंड नेशनिलिज्म', अल बलरा एजेन्सीज, लाहौर, 1929।
2. ए0 जे0 जैदी, 'अनवारे अबुल कलाम' (श्रीनगर 1959) डॉ0 एम0 यू0 कादरी का लेख 'कंट्रीब्यूशन ऑफ आजाद इन रिनेसां ग्राफ इंडियन कल्चर'।
3. सर स्लीमनः रैविल्स एंड रिकलेक्शनस ऑफ ऐन इंडियन आफिसर।
4. जी0 एच0 जानसेन : मिलिटेंट इस्लाम ।
5. आर.सी. मजूमदारः हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट खंड 1 ।
6. नोमानः मुस्लिम इंडिया, पृ0 403, 404, मु.वि.लाल, खंड 2,।

*Corresponding Author: पाकीजा तवकीर शीबा